

5. रूपमुखापवर्जिततनु 104, 40. नयनापवर्जित BṚH. 23, 12. — 3) *entlassen*: मुननसो दिव्याः खेचैरपवर्जिताः so v. a. *wurden gestreut* BṛĀg. P. 3, 24, 8. — 4) *abtrennen, abreißen*: भस्त्रापवर्जितैस्तेषां शिराभिः RAGH. 4, 63. मदच्युता मतङ्गनेन स्रगिवापवर्जिता KIR. 1, 29. — 5) *umstossen, umwerfen*: घटे ऽपवर्जिते JĀGĀN. 3, 300. कुम्भे VARĀH. BRH. S. 53, 111. — 6) *verstossen, ächten*: स्रपवर्जित (= संस्कारानर्क NĪLAK.) MBH. 13, 2571. — 7) *überlassen, verleihen, geben, schenken*: यदि तावन्न गृह्णामि ब्राह्मणेनापवर्जितम् MBH. 12, 7308. दत्तियामपवर्ज्य 12276. HARIV. 1114. मह्यानां निष्काणां सक्तमपवर्ज्य R. GORR. 2, 32, 24. 27. सुकृद्यश्चात्मनः कामानीप्सितानपवर्ज्य 14. भीमापवर्जितं (भीमेनावर्जितं ed. Bomb.) पिण्डम् BṛĀg. P. 1, 13, 21. स्रपवर्जितौ वैरा *verabfolgt* (nicht bloss gewährt) R. GORR. 2, 26, 23. स्राह्यमपवर्ज्यन् *darbringend* MBH. 13, 4263. — 8) *abschliessen, beendigen* LĀTJ. 10, 2, 11. प्रतिज्ञाम् *sein Versprechen lösen* R. 1, 44, 49 (45, 44 GORR.). 51. — Vgl. स्रपवर्जन.

— व्यप s. व्यपवर्ग. — *caus. aufgeben, verlassen*: स तु सर्प इव त्वचं पुनः प्रतिपेदे व्यपवर्जितां श्रियम् RAGH. 8, 13.

— *समप caus. überlassen, geben, schenken*: ते (गावौ) चोच्छ्रवृत्तये राज्ञम्या समपवर्जिते MBH. 12, 7296.

— स्रपि *Jmd (loc.) Etwas zuwenden*: मयि देवासौ ऽवृत्तपि कर्तुम् RV. 10, 48, 3. 120, 3. स्पृमगभे डुधये ऽवृते च कर्तुं वृत्तव्यपि वृत्तवृत्त्ये *hinrichten auf (loc.)* 6, 36, 2.

— स्रभि s. स्रभिवर्ग.

— स्रव *abdrehen, abtrennen*: गर्भम् KĀTH. 13, 3. — *caus. wegschaffen, beseitigen* TBa. 1, 4, 6, 5.

— स्रा 1) *zuwenden*: कुविदास्य रथो गवां केतुं परमावर्जिते नः RV. 1, 33, 1. — 2) *sich zuwenden, sich aneignen*: स्रा स स्त्रीणां सुकृतं वृद्धे ÇĀT. Bā. 14, 9, 4, 3. स्रावृत्तमन्यासो वर्चः RV. 1, 159, 6. स्रा मावृत्ता मर्त्यां दुश्चेताः 8, 90, 16. यथा वातरथो प्राणामावृद्धे गन्ध स्राशयात् BṛĀg. P. 3, 29, 20. — 3) *Jmd (abl.) Etwas vorenthalten*: मा स्यायसः शंसमा वृत्ति (nach ŚĀ. von ब्रश्च) देवाः RV. 1, 27, 13. — 4) *Jmd (acc.) geneigt sein*: तमेव दयितं भूय स्रावृद्धे पतिमश्विका BṛĀg. P. 4, 7, 59. — *caus.* 1) *neigen*: कलशम् ÇĀk. 11, 9. कुमारस्य शिरसि कलशमावर्ज्य VIKR. 87, 15. स्राचर्यं शाखाः RAGH. 16, 19. दुष्टीः MEGH. 47. स्रावर्जित *geneigt, gesenkt* MBH. 1, 5883, 2, 1804, 7, 1145, 2073 (12, 9187), 7, 6905. HARIV. 3720 (स्रावर्जितमुवस्फन्ध die neuere Ausg., = भ्रामित NĪLAK.). 6780, 8422. RAGH. 13, 17, 24. KUMĀRAS. 2, 26, 3, 54, 7, 54. Spr. 3445. H. an. 4, 24. MED. k. 202. — 2) *eine Flüssigkeit neigen so v. a. ausgiessen*: स्रावर्जित MBH. 3, 2936. कृविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु RAGH. 1, 62, 67. KUMĀRAS. 3, 34, 7, 10. — 3) *ausaugen*: स्रावर्जितं मया चञ्चा कृद्यात्तव शोषितम् NĀGĀN. 63, 1. — 4) *darreichen*: तनयावर्जितपिण्ड RAGH. 8, 26. भीमेनावर्जितं (so die ed. Bomb.) पिण्डम् BṛĀg. P. 1, 13, 21. RAGH. 13, 80. Spr. 229. चतुर्दिगावर्जितसंभूता विभूतिम् 6, 76. — 5) *sich Jmd geneigt machen, für sich gewinnen*: सर्वत्रावर्जयामास नगरीवासिनो मनः KATHĀS. 24, 104. तं वाकनमुत्तरावर्ज्य 62, 158. DAÇAK. 79, 9. ÇUK. in LA. (III) 37, 15. मरीचिमावर्जितवतीव DAÇAK. 66, 11. स्रावर्जित RATNĀV. 2, 17. NĀGĀN. 2, 5. KATHĀS. 42, 94. गुणैरावर्जितप्रज्ञम् 44, 24. 52, 368 (nicht स्रवर्जित). 66, 115. 93, 60. 97, 11. RĀGĀ-TAR. 5, 303. DAÇAK. 31, 5. Vgl. वर्त् mit स्रा *caus.* 6).

— स्रावर्जित HARIV. 3799 wohl fehlerhaft für स्रावर्जित, wie die neuere

Ausg. liest. — Vgl. स्रावर्जन, स्रावर्जित.

— स्रपा, *partic.* °वृक्त *beseitigt oder vermieden*: स्रपावृक्ता स्रवर्ज्यः RV. 8, 69, 8.

— प्रा *erfüllen*: प्रावृद्धे पयशो जगत् BṛĀg. P. 4, 8, 68.

— व्या *absondern, abtheilen*: तामन्नाद्याय व्यावृष्यासते PAÑĀV. Bā. 10, 3, 9, 5, 8. तां चतुर्था व्यावृष्य गपेत् SHADV. Bā. 2, 2. चतुर्वनर्दा कृत्वा Comm.

— परिव्या *trennen von so v. a. retten vor*: परि वः सैन्याद्वाद्यावृञ्जतु घोषिण्यः ÇĀNKH. GRH. 3, 9.

— समा *an sich ziehen, sich aneignen*: तेनैव ब्रह्मणोभयतो राष्ट्रं परिगृह्णत्येकधा समावृद्धे TS. 2, 1, 2, 9. — *caus. neigen*: °वर्जित *geneigt, gesenkt*: केतु KUMĀRAS. 6, 7. नेत्र RAGH. 6, 15.

— उद् *heraustrennen, austilgen*: उद्गो ऽसि पाटमानं म उद्दङ्घि KAUSH. Up. 2, 7. — *intens. schwingen*: स्रष्टा पूषा शिथिरामुद्गरीवृञ्जत् RV. 6, 58, 2. = उद्यच्छन् ŚĀ. = *परित्यक्तवान्* derselbe zu TBa.

— नि 1) *niederbeugen, hinunterdrücken; zu Fall bringen*: नवतिं नवं श्रुतो नि चक्रेण रथ्या डुपदावृणक्त् RV. 1, 53, 9. 54, 5. 101, 2. येनो पयिव्यो नि क्रिविं शयथ्यै वृषेण कृत्व्यवृणक्त् 2, 17, 6. वीरान् 14, 7. वि डुर्वीणा स्रावृणस्रधवाचः 5, 29, 10, 32, 8. समन्तेनं गृणते नि वृद्धि 10, 87, 11. — 2) *wegwerfen*: तानियं प्रतिगृहीतातपतो व्यवृञ्जन् AIR. Bā. 6, 35.

— स्रनि *versenken*: श्रुतं कवषं वृद्धमपस्वने द्रुक्तुं नि वृणगवृञ्जबाहुः RV. 7, 18, 12.

— परा 1) *abwenden*: परा चिच्छीषा ववृञ्जत इन्द्रापवनां यस्वभिः स्पर्धमानाः d. h. sie flohen RV. 1, 33, 5. — 2) *abdrehen*: त्राष्ट्रस्य त्रीणि शीषा परा वर्क् RV. 10, 8, 9. — 3) *wegwerfen, beseitigen, verstossen, im Stiche lassen*: मा न इन्द्र परा वृणक्त् RV. 8, 86, 7. परा पूर्वेषा सख्या वृणक्ति 6, 47, 17. मा नः परा वर्क् गावोष्ठेषु 89, 7. मा नो स्रिमन्महाधने परा वर्गभारभृद्यथा 8, 64, 12. पुत्रमयुवः परावृक्तम् 4, 30, 16. — Vgl. परावृञ्.

— परि 1) *ausbiegen, ausweichen; umgehen, vermeiden; übergöhen, verschonen mit (instr.)* RV. 1, 124, 6. 172, 3. 183, 4. परि श्वधेव डुरितानि वृष्याम् 2, 27, 5. परि णो हेतो रुद्रस्य वृष्याः 33, 14, 3, 29, 6. 31, 17, 56, 4. 6, 51, 16. 75, 12. परि द्वेषोभिर्यमा वृणक्त् 7, 60, 9. क्वं न परि वर्जति 8, 1, 27. 45, 10. 47, 5. 10, 142, 3. शतमन्यापरि वृणक्त् मृत्युन् AV. 1, 30, 3. 6, 93, 1. यज्ञस्याणुम् TBa. 2, 1, 4, 4. कर्सा VS. 13, 41. देवता वा एतं परिवृञ्जति यमन्तमभिशासति *meiden* PAÑĀV. Bā. 18, 1, 11. इन्द्रं देवताः पर्यवृञ्जन् *verstießen, ächteten* AIR. Bā. 7, 28. — 2) *umgeben, umschliessen*: वृद्धे BṛĀg. P. 5, 20, 7. — Vgl. परिवर्ग, °वर्ग्य, °वृक्त *fig.* — *caus.* 1) *abhalten von, entfernen*: स्रङ्गादङ्गात्प्र च्यावय कृद्यं (wohl कृद्यात्) परि वर्ज्य AV. 10, 4, 25. — 2) *meiden, vermeiden*: स्रतिभोजनम् M. 2, 57. दशैतानि कुलानि 3, 6, 4, 6, 73. 114. 206. 8, 127. JĀGĀN. 1, 170. MBH. 2, 1790. एवंविधा स्त्रीम् 13, 518. देयाः किल्लजणा गावः काश्चापि परिवर्जयेत् 3443. 14, 578. R. 4, 31, 8. MRĀKH. 7, 24. Spr. 2147. 2423. 4776. विप्रियं परिवर्जये MBH. 3, 14025. परिवर्जितसंस्पर्शा KATHĀS. 36, 45. *aufgeben, verlassen*: परिवर्ज्य गुरुं पार्क यत्र राजा डुर्योधनः MBH. 7, 7272. R. 5, 24, 35. *Jmd übergöhen, nicht berücksichtigen* RĀGĀ-TAR. 6, 90. परिवर्जित *verlassen, dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend; die Ergänzung im instr. (abl.) oder im comp. vorangehend*: तया R. GORR. 2, 49, 12. पित्रा KATHĀS. 74, 61. स्वगणसुकृद्बन्धुभ्यः BṛĀg. P. 5, 8, 6.